उपसंहार

उपसंहार

अपनी सृजनशील प्रतिभा से कथा-शिल्प में नए-नए तथा सार्थक प्रयोग करनेवाली प्रयोगशील उपन्यासकार डॉ सूर्यबाला का नाम आधुनिक हिंदी साहित्य जगत में अपना विशेष महत्त्व रखता है। सूर्यबाला के प्रामाणिक जीवन परिचय एवं व्यक्तित्व को देखकर हम कह सकते हैं कि सूर्यबाला का संपूर्ण जीवन हँसता-खेलता रहा है। पवित्र भूमि वाराणसी में उनका बचपन बीता। आर्थिक कठिनाइयाँ बहुत कम महसूस हुई। माता-पिता और बहन द्वारा साहित्यिक प्रेरणा प्राप्त हुई। जिससे उन्होंने उच्च शिक्षा भी हासिल की और साहित्यकारों में अपना नाम रोशन किया। विवाह तथा संतान को लेकर उन्हें अपने जीवन में पूर्ण रूप से संतोष है। उनका व्यक्तित्व आदर्श व्यक्तित्व है। उनकी सफलता का रहस्य उनकी लगन, ईमानदारी है। मिलनसार, हँसमुख और संवेदनशी सूर्यबाला से हमें प्रेरणा मिलती है।

सूर्यबाला के जीवन की छाया उनके साहित्य पर दिखाई देती है। सूर्यबाला संवेदनशील होने के कारण जो अनुभव उन्हें मिले वही साहित्य में कहानी, उपन्यास बने हैं। बनारस विश्वविद्यालय में नौकरी के दौरान उन्होंने जो देखा उसका प्रतिबिंब 'दीक्षांत' उपन्यास में पाया जाता है। सूर्यबाला का कृतित्व देखने से पता चलता है कि लेखिका सिर्फ उपन्यास, कहानियों तक ही सीमित नहीं रही है, बल्कि व्यंग्य के क्षेत्र में उन्होंने प्रवेश कर समाज में व्याप्त विडंबनाओं पर करारी चोट की है। उपन्यास साहित्य में उन्होंने पारिवारिक जीवन, नारी समस्या, शैक्षिक समस्याओं को उद्घाटित किया है। शिक्षा जैसे क्षेत्र की आज की स्थिति पर यथार्थ प्रकाश डाला है। उनकी कहानियाँ पारिवारिक जीवन को प्रस्तुत करनेवाली हैं। उन्होंने व्यंग्य के क्षेत्र में सिर्फ प्रवेश ही नहीं किया बल्कि अधिक्य से वहाँ अपना कदम स्थिर किया है। अपने जीवन की यथार्थता और स्वानुभूतियें को अपनी रचनाओं में चित्रित करने में सूर्यबाला सफल हुई है। अन्य कुछ लेखिकाओं की तरह सूर्यबाला केवल नारी जीवन तक सीमित नहीं रही है। इसी कारण सूर्यबाला साठोत्तर महिला लेखिकाओं की तुलना में ऊँची उठ जाती है।

साहित्य और समाज का संबंध अन्योन्याश्रित है। प्रत्येक युग का साहित्य उस युग की परिस्थितियों से प्रभावित रहता है। आधुनिक हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग का चित्रण होता आ रहा है। परंतु आज

शैक्षिक क्षेत्र उपेक्षित रहा है। लेकिन सूर्यबाला ने शैक्षिक क्षेत्र में अलग उपन्यास लिखा है। सूर्यबाला ने भी मध्यवर्ग को उपन्यासों का विषय बनाया है। उपन्यासों की कथावस्तु का संगठन वर्तमान, अतीत की धरातल पर किया है। आज शिक्षा क्षेत्र में भ्रष्टाचार ने स्थान पा लिया है। शिक्षा क्षेत्र में गंदी नीति आ गई है। अनुशासनहीनता दिखाई दे रही है। इस विषय को लेकर सूर्यबाला ने 'दीक्षांत' की कथावस्तु बनाई है। 'अग्निपंखी' उपन्यास में समाज की अभिशप्त नारी की कहानी है। दोनों यथार्थवादी उपन्यास हैं। कथानक में मुख्य कथा के साथ-साथ प्रासंगिक कथाएँ भी समायोजित की गई हैं। मुख्य कथा को सहाय्य करनेवाले पात्रों का चित्रण भी बडे ही सुंदर और कलात्मकता से किया है। प्रमुख पात्र, सहायक पात्र और गौण पात्रों के चरित्र भी विशेष रूप से उजागर हुए हैं। इन उपन्यासों के पात्र कथानक में गतिशीलता एवं रोचकता लाते हैं। सूर्यबाला ने शहरी परिवेश के साथ ग्रामीण परिवेश को भी महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। दोनों उपन्यास सामाजिक होने के कारण उनमें रोचकता बनी रही है। सूर्यबाला के दोनों उपन्यासों के शीर्षक भी सार्थक लगते हैं। 'दीक्षात' उपन्यास में अध्यापक ने जो दीक्षा ली थी। उसका आज के वर्तमान युग में शिक्षा-क्षेत्र में गंदी नीति के कारण अंत होता है। इसलिए 'दीक्षांत' शीर्षक सार्थक है। संयुक्त परिवार में झगडा होने के कारण छोटी-सी बात को बढावा दिया जाता है और संघर्ष तीव्र बनता है। इस आधार पर 'अग्निपंखी' शीर्षक सार्थक है। इस प्रकार सूर्यबाला के दोनों उपन्यास सामाजिक और यथार्थवादी हैं।

सूर्यबाला के उपन्यासों के पात्र वर्तमान युग के हैं। मध्य वर्ग के पात्रों के माध्यम से आज के एक ईमानदार, निष्ठावान, विनम्र और सच्चे व्यक्ति की यातना करूण लेकिन विश्वसनीय रूप में उतारी है। वर्तमान परिवेश, नई सभ्यता, संस्कृति-संक्रमण, टूटते परिवार, अर्थाभाव आदि के कारण एक वृद्धा और उसमें भी विधवा नारी का जीवन किस तरह यातनामय बन जाता है इसे सफलता से चित्रित किया है। पात्र वर्तमान युग के होने से वर्तमान से प्रभावित रहे हैं। प्रमुख पात्रों का चित्रण करने के लिए सहायक पात्रों का चित्रण किया है। आदर्श उसूलवाले अध्यापक के माध्यम से अन्याय का सामना करने की प्रेरणा दी है। सहायक पात्रों में मानवता से भरे हुए चरित्रों का चित्रण किया है। दु खी, असहाय लोगों के प्रति सहानुभूति रखनेवाले पात्रों का निर्माण लेखिका ने किया है और उसमें उसे सफलता भी मिल गई है।

सूर्यबाला ने अपने साहित्य द्वारा शैक्षिक पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है। आज शिक्षा जैसा पवित्र क्षेत्र भी भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी के माहौल में घिर गंया है। आज के छात्र गुंडागर्दी, भ्रष्टाचार के माहौल में रहने के कारण अध्यापकों से उद्दंडता से पेश आते हैं। अध्यापकों को नौकरी संभालने के लिए समाज के सामने दयनीय बनना पडता है। उच्चशिक्षा के बावजूद भी आज नौकरी नहीं मिलती है। इसी कारण उन्हें आर्थिक अभाव की समस्या का सामना करना पडता है। विद्यार्थियों से लेकर संचालकों तक शैक्षिक माहौल बिगड चुका है, जिसके बीच ईमानदार अध्यापकों को नाहक पिसना पडता है। आजकल गलत शिक्षा प्रणाली का प्रचार चल रहा है। आज की शिक्षा संस्थाएँ बडे-बडे अमीरों के हाथ में रहने के कारण शिक्षा का मूल्य कम हो गया है। परीक्षा में गलत नीति का अवलंबन किया जा रहा है। आज पूर्ण रूप से अनुशासन बिगड चुका है। इस अनुशासनहीनता का समाज जीवन पर बुरा असर पडा है। क्योंकि समाज में गरीब वर्ग शिक्षा पा नहीं सकता और अव्वल छात्र भी अनुशासनहीनता के कारण पीछे रहते हैं।

जिस प्रकार शैक्षिक क्षेत्र में कई समस्याएँ दिखाई दी हैं उसी प्रकार वर्तमान परिवारों में तथा समाज का अंतरंग भी कई समस्याओं से ग्रस्त है। आज समाज में संयुक्त परिवार टूटने लगा है। रिश्ते आत्मकेंद्रित होने लगे हैं। पारिवारिक जीवन अशांत बन गया है। आर्थिक तंगी, अभावग्रस्तता, मनुष्य का स्वभाव आदि के कारण रिश्ते आत्मकेंद्रित बने हैं। परिवार में संपत्ति, जायदाद के कारण भाई-भाई में संघर्ष हो रहा है। वर्तमान और पुरानी पीढी में विचार-भिन्नता दिखाई दे रही है। पीढीगत मान्यताओं की टकराहट होने लगी है। झूठी प्रतिष्ठा के सामने माता-पिता का बुढापा एक बोझ बन गया है। मनुष्य के समृद्धि पाने के बाद भी बूढे लोगों को आज परिवार में स्थान नहीं मिलता। इस वैज्ञानिक युग में भी तंत्र-मंत्र जैसे अधविश्वासों के प्रति लोगों की श्रद्धा दिखाई दी है। इन सभी समस्याओं का सामाजिक जीवन पर गहरा असर पडता है। सूर्यबाला ने अपने उपन्यासों में इन समस्याओं के परिणामों को उजागर किया है।

सूर्यबाला की भाषा शैली में प्रभावात्मकता है। 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यास के कथोपकथन स्वाभाविक, उपयुक्त, पात्रानुकूल हैं। कथोपकथन से लेखिका ने पाठकों के साथ तादात्म्य स्थापित किया है। संक्षिप्त कथनों का प्रयोग पाठकों को आकर्षित करता है। सूर्यबाला ने सरल, सरस तथा सहज भाषा का प्रयोग कर उपन्यासों को सुंदर और प्रभावपूर्ण ढग से प्रकट किया है। विभिन्न भाषा के शब्दों के हिंदी में

उचित प्रयोग कर शहर और गॉव की भाषा का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने में सफलता पाई है। शैली के महत्त्वपूर्ण प्रकारों को अपने उपन्यासों में उचित स्थान दिया है। भाषा-वैविध्य, शैली की नवीनता आदि को भावाभिव्यक्ति के सशक्त साधन बनाए हैं।

निष्कर्षत: सूर्यबाला के उपन्यासों के अध्ययन विश्लेषण के बाद यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि सूर्यबाला उच्च कोटि की सफल सामाजिक उपन्यासकार है। उनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण उपलब्ध है। उपेक्षित शिक्षा क्षेत्र पर भी उपन्यास लिखकर साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। आज वृद्ध, विधवा नारी के जीवन पर ढेर सारे उपन्यास उपलब्ध हैं, फिर भी 'अग्निपंखी' का अनोखापन अलग है। मॉ का असीम प्यार इससे व्यक्त होता है। दोनों उपन्यास महत्त्वपूर्ण हैं। लेखिका दोनों उपन्यासों द्वारा समाज परिवर्तन चाहती है। शिक्षा में गलत नीति का अवलंब आए तो उसका विरोध करने को कहती है। अत: स्पष्ट है कि सूर्यबाला उच्च कोटि की उपन्यासकार है। अतएव उपन्यास विधा के लिए सूर्यबाला का यह योगदान महत्त्वपूर्ण है।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ -

हर अनुसंधान की कोई-ना-कोई उपलब्धि होती ही है। अन्यत. उस शोध कार्य का कोई मूल्य ही नहीं रहेगा। सूर्यबाला के उपन्यासों के सूक्ष्म अध्ययन के निम्नलिखित मौलिक उपलब्धियों तक पहुँच पाई हूँ -

1 सूर्यबाला के मौलिक उपन्यासों में उनके जीवन का अंकन हो चुका है। अतएवं सत्य पर आधारित कथानक को पढने में पाठक रूचि रखता है।

2 इन उपन्यासों द्वारा सूर्यबाला ने अन्याय का विरोध करने की प्रेरणा दी है।

3 नारी-जीवन की दयनीयता को चित्रित कर वृद्ध विधवा नारी के प्रति पाठकों की सहानुभूति प्राप्त करा लेने में सूर्यबाला सफल हुई है।

4 इन उपन्यासों से निराशापूर्ण जीवन से ऊपर उठकर सुखमय जीवन के लिए प्रयत्नशील रहने की प्रेरणा मिलती है।

नई दिशाएँ -

सूर्यबाला एक साथ उपन्यासकार, कहानीकार और व्यंग्यकार हैं। साहित्य की हर विधा पर उन्होंने लेखनी चलाई है और उनकी हर विधा पर शोधकार्य किया जा रहा है। मैंने उनकी उपन्यास विधा चुनी है, फिर भी अन्य शोध छात्रों के लिए कुछ नई दिशाएँ बचती हैं, जैसे -

1 सूर्यबाला के उपन्यासों में मध्यवर्ग का चित्रण।

2 सूर्यबाला के उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी समस्याएँ।